# सातवाँ अध्याय

# आज्ञा का महत्त्व

श्री साई महाराज के दर्शनो के लिये आया हुआ कोई भी व्यक्ति उनकी आज्ञा के बिना वापिस नही लौट सकता था। श्री साई महाराज एक प्रकार से शिरडी के बेताज बादशाह थे। उनकी आज्ञा के बिना एक पत्ता भी नही हिल सकता था। श्री बाबा सभी भक्तों पर अपने अधिकार का प्रयोग करते थे; परंतु उनके आचरण में अहंकार या गर्व तो नाम मात्र के लिये भी दिखाई नही देता था, इसके विपरीत उनकी प्रत्येक आज्ञा में भक्तों के प्रति पूर्ण स्नेह और अपनत्व की सच्ची भावना ही दृष्टिगोचर होती थी। जो भक्त उनकी आज्ञा का पालन करता था। परिणाम में उसका कल्याण ही होता था। इसके विपरित जिन भक्तों ने उनकी आज्ञा का उल्लंघन कर अपनी ही मनमानी

की, उन्हें परिणाम मे कटु अनुभव का सामना करना पडा। श्री बाबा की आज्ञा का उल्लंघन करना भी साहस का कार्य था। इस प्रकार के अनेक अनुभव सुनकर शिरडी में श्री साई बाबा के दर्शन करने के बाद वापिस लौटने के लिये उनकी आज्ञा माँगने की एक प्रथा ही चल पडी थी। कई लोग तो श्री बाबाकी आज्ञा न मिलने के कारण शिरडी में ही रूके रहते थे।

इस प्रसंग में श्री बाबा के एक भक्त कप्तान विनायकराव हाटे का अनुभव उल्लेखनीय है। महायुद्ध मे नोकरीपर जाने से पूर्व अपने नियमानुसार वह श्री बाबा के दर्शनों के लिये गये। परंतु श्री बाबा ने उन्हें वापसि लौट जाने की आज्ञा देने से साफ इन्कार कर दिया। परिवार के सब लोग चिंतित हुए। सेना के कार्यालय से आने वाले तारों का ढेर लगने लगा। पर श्री बाबा टस से मस न हुए। अंत में उचित तथा शुभ घडी आते ही श्री बाबा ने उन्हें शिरडी छोडने की स्वीकृति दी। फ्रान्स की रणभूमि मे उत्कृष्ट सेवाएँ कर विनायकराव सुकशल स्वदेश वापिस लौट आये। सेवा करने के उद्देश्य से बहुत दिनों तकवास करने का संकल्प मन में लेकर शिरडी आते थे। पर श्री बाबा उन्हें क्षण भर के लिये भी ठहरने की आज्ञा ने देकर तुरन्त ही लौट जाने को कह देते थे। बम्बई उच्च न्यायालय के एक कर्मचारी स्व. बालाराम बा. वगल शिरडी में कुछ दिन व्यतीत करने की इच्छा से आये। परंतु श्री बाबा ने उन्हें शीघ्र वापिस लौट जाने की आज्ञा दी। बालारामजी को बडा आश्चर्य हुआ। परंतु, श्री बाबा में पूर्ण श्रद्धा रखते हूए वे उसी क्षण वापिस चल दिये। प्रात: काल वे घर पहुँचे तो देखा की वहाँ बडा कोलाहल मचा हुआ है। उनका सब से बडा लडका सख्त बिमार था। घर के लोग उन्हें शिरडी तार भेजने का विचार कर रहे थे। बंबई में बालाराम के घर मे जो परिस्थिती बन गई थी, उस अंतर्ज्ञान से जान कर ही श्री बाबाने उन्हे उल्टे पाँव शिरडी से रवाना कर दिया।

दर्शन करने के बाद जब भक्त लोग वापिस जाने के लिये आज्ञा माँगते थे, तो श्री साई महाराज के मुख से प्रत्येक अवसर पर कुछ-न-कुछ महत्त्वपूर्ण

सांकेतिक शब्द निकलते थे। बहुधा वह किसी संकट की पूर्व सुचना होती थी। कई अवसरों पर तो श्री बाबा के रहस्यमय उद्‌गारों का ठीक-ठीक अर्थ तत्काल स्पष्ट नही होता था। परंतु बाद में भक्त को जो अनुभव मिलता था। उससे श्री बाबा के शब्दों का रहस्य उसके समक्ष खुल जाता था। एक बार श्री साई के परम भक्त तात्या कोते पाटील ताँगे में बैठकर कोपरगाँव की मंडी में जाने के लिये निकले। श्री बाबा की आज्ञा प्राप्त करने के लिये वे जल्दी-जल्दी द्वारकामाई पहूँचे। उनकी ओर देखकर श्री बाबा ने कहा-''यह बिना बात की जल्दी कैसी? कुछ देर यही ठहरो। बाजार उठ भी गया तो काई हानि नहीं। पर इस समय गाँव से बाहर मत जाओ।'' तात्या पाटील को किसी आवश्यक कार्य के लिये जाना ही था, इसलिये वे बैचेन हो गये। उनकी उतावली को देखकर श्री साई पुन: बोले ''ठीक है, जाना चाहते हो तो जाओ। पंरतु कम से कम शामा (माधवराव) को तो अपने साथ ले जाओ।'' पर श्री बाबा की आज्ञा की अवहेलना कर तात्या पाटील ने तुरन्त ही अपना ताँगा दौडाया। तात्या पाटील ने थोडे दिन पहले ही तीन सौ रूपये खर्च कर एक नया घोडा खरीदा था। वह घोडा बडा चंचल और द्रुतगामी था। सहसा वह काबू से बाहर हो गया। फलस्वरूप अचानक उसकी छाती की नस तडाक से फट गई और गाँव के सीमाके निकट ही 'सावली विहिर' तक पहूँचते वह भूमि पर लुढक गया। ताँगा पूर्णत: टूट-फूट गया। भाग्यवश तात्या पाटील को काई गंभीर चोट नही पहूँची। अपने अलौकिक सामर्थ्य से श्री बाबा ने उनकी रक्षा कर ली थी। श्री बाबा के शब्दो का स्मरण होते ही तात्या पाटील ने वही श्री साई महाराज को साष्टांग प्रणाम किया।

एक बार बम्बई के एक यूरोपियन सज्जन मन में कुछ गुप्त भाव लेकर शिरडी आये। श्री बाबा ने उन्हे द्वारकामाई में प्रवेश करने की अनुमति नही दी और उन्हें बाहर ही खडा रहने के लिये कहा। उस मानी यूरोपियन नें इसे अपना घोर अपमान समझा। अत: उसने रूष्ट होकर तुरन्त ही लौट जाने का

निश्चय किया। श्री बाबा ने उन्हें बाहर खुले स्थान में तम्बू में एक रात्रि व्यतीत करने के लिये कहा। पर वह श्री बाबा के आदेश की उपेक्षा कर तुरन्त ताँगे में बैठकर शिरडी से कोपरगाँव की ओर चल पडे। संयोगवश सामने एक बाईसिकिल का आना निमित्त-मात्र ही हुआ, और ताँगा उलट गया। युरापियन सज्जन धडाम से नीचे गिर पडे। वे बुरी तरह घायल हुए और उनकी पीठ तो रक्त से लथपथ हो गई। परिणाम यह हुआ की उन्हें एक लम्बे अर्से तक कोपरगाँव के अस्पताल में उपचार कराना पडा। अनागत को जाननेवाले श्री साई की आज्ञा कई बार भक्तों पर आनेवाली विपत्ति को टालने के लिये ही होती थी। पर जो मानी व्यक्ति उनकी आज्ञा की अवहेलना करते थे, उन्हें निश्चय ही संकट झेलना पड जाता था।

एक बार श्री साई के परम भक्त काका महाजनी श्रीकृष्णजन्माष्टमी के उत्सव में सम्मिलित होने के लिए आठ दिन का अवकाश लेकर शिरडी पहुँचे। जब वे श्री बाबा के दर्शनार्थ द्वारकामाई में गये तो श्री बाबा ने अचानक प्रश्न किया, ''काका, तुम वापिस कब जाओगे?'' श्री बाबा का यह अप्रत्याशित प्रश्न सुन कर अपने मन की इच्छा प्रकट न करते हुए महाजनी हाथ जोडकर बोले-''बाबा, जब आप कहेंगे, मैं उसी क्षण वापिस जाने के लिये तैयार हूँ।''

इस पर श्री बाबा ने उत्तर दिया-''अच्छा, तो फिर तुम सुबह की गाडी से वापिस चले जाओ।'' श्री बाबा की आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस तो किसी भी भक्त में नही था। श्री बाबा की आज्ञानुसार महाजनी दूसरे दिन बम्बई पहूँच कर अपने काम पर उपस्थित हो गए। उन्होंने वहाँ जाकर देखा कि उनका उच्च अधिकारी बडी कठिनाई में पडा था। कार्यालय का एक अन्य कर्मचारी रोग-ग्रस्त हो गया था और इस कारण कार्यालय का सारा काम रूका पडा था। महाजनी को उनका स्वीकृत अवकाश रद्द कर, शीघ्र बम्बई अपने काम पर वापिस आने का एक पत्र भी कार्यालय से शिरडी भेजा जा चुका था। कुछ दिनों बाद वह पत्र वापिस बम्बई आ गया। शिरडी में काकासाहेब

को देखते ही उनके बम्बई कार्यालय में जो अव्यवस्था उत्पन्न हो गई थी, वह श्री बाबा के ध्यान में आ गई और उन्होंने पत्र मिलने से पूर्व ही तुरन्त काकासाहेब को बम्बई लौटने का परामर्श दे दिया। श्री साई की इस लीलासे यह स्पष्टत: सिद्ध हो जाता है कि वे अपने भक्तों की कठिनाईयों के प्रति कितने जागरूक रहते थे।

इस के ठीक विपरीत ऐसी एक घटना श्री बापूसाहब धुमाल के सम्बन्ध में है, जो बडी ही रोचक है। श्री धुमाल न्यायालय के एक कार्य के लिए निफाड जा रहे थे। मार्ग में वे श्री बाबा के दर्शनार्थ शिरडी आये। श्री बाबा ने उन्हें कुछ दिन शिरडी में ठहरने का परामार्श दिया। पर, उधर न्यायालय में तारीख निश्चित हो चुकी थी, और इसलिए श्री धुमाल को निफाड में न्यायाधीश के सामने अनिवार्यत: उपस्थित होना था। परंतु, श्री बाबा ने अपनी अनुमति नही दी। श्री बाबा में पूर्ण विश्वास रख श्री धुमाल वहीं रहे। आश्चर्य की बात, कि जिस न्यायाधिश की अदालत में उनका मुकदमा चल रहा था, वे स्वयं ही मुकदमे के दिन उदर पीडा से ग्रस्त हो गये और श्री धुमाल के मुकदमे की सुनवाई स्थगित हो गई। फिर कुछ महीनों के बाद मुकदमे की सुनवाई आरम्भ हुई और अंत में श्री धुमाल उस मुकदमे में विजयी हुए।

श्री साई बाबा दर्शनार्थ आये हुये किसी भक्त को यदि वापिस जाने के लिए अनुमति नही देते थे तो इसका मुख्य कारण उस भक्त पर भविष्य में आने वाली विपत्ति को टालना ही होता था। पर इसके अतिरिक्त कभी-कभी श्री साई महाराज भक्तों को उपदेश देने के अभिप्राय से भी रोक लेते थे।

एक बार ऐसे ही नानासाहेब चाँदोरकर एक कीर्तनकार को साथ लेकर शिरडी पहूँचे। उस कीर्तनिया का किसी दूसरे गाँव में कीर्तन का आयोजन था और इस कारण वापिस लौटने के लिए वह बडा व्यग्र था। जब वे दोनों श्री बाबा की आज्ञा माँगने के लिए गये, तो श्री बाबा ने स्पष्टत: यह कह दिया- ''आज आप दोनों न जाये तो अच्छा है।'' नानासाहेब ने तो अपना निश्चय

बदल दिया; परंतु कीर्तनिया श्री बाबा की अवहेलना कर वहाँ से चल दिया। उसे जाते हुए देख श्री बाबा ने नानासाहेब की और मुडकर कहा-''देख, लोग कितने स्वार्थी होते है। जब घडी आती है तो अपने साथी को छोडकर निजी स्वार्थ पूरा करते है। इसलिये सदैव ऐसा मित्र या साथी ढूँढना चाहिये, जो कभी भी हमारा साथ न छोडे। सभी भूतमात्रों से स्नेह रखना चाहिए; परंतु सगं सद्‌गुरू का ही करना चाहिये। वह अपने भक्तों का साथ कभी भी नहीं छोडता।'' सायंकाल नानासाहेब ने स्वस्थ चित्त से भोजन किया और पूर्ण विश्राम करने के बाद श्री बाबा की अनुमति से वे स्टेशन पहूँचे। वहाँ पहूँचकर उन्होनें कीर्तनिया को उद्विग्न मुद्रा में बैठे देखा; क्योंकि उस दिन गाडी बहुत ही देर से आ रही थी। किर्तनिया को वहाँ अन्न-जल के बिना क्षुधित अवस्था में ही गाडी की लम्बी प्रतीक्षा करनी पडी।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋